ě

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं॥ नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥ पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥ आर्नैदकंद कोशलचंद दशस्थ-नंदनं॥ शर-चाप-घर, संग्राम-जित-खरदूषणं॥ कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं। दानव-दैत्यवंश-निकंदनं। सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं। दिनेश दीनबंध् आजानुभुज रषुनंद

रावरो ॥ मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥ तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ करुना निष्यान सुजान सीलु सनेहु जानत यवरो॥ एहि माँति गौरि असीस सुनि सिष्य सहित हिर्यै हरषी अली। इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं। मनु आहि राचेउ मिलिहि सी बरु सहज सुंदर सौँवरो। सो.— जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

## श्रीराम-स्तृति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं॥ नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥ पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥ आर्नैदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं॥ संग्राम-जित-खरदूषणं ॥ अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं। दानव-दैत्यवंश-निकंदनं। सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं। शर-चाप-धर, दिनेश दीनबंधु आजानुमुज रधनंद नु

मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥ करुना निष्यान सुजान सीलु सनेहु जानत यवरो॥ तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ मनु आहि राचेउ मिलिहि सी बरु सहज सुंदर साँबरो। सो.— जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं। कु मीत गौर असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली। सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

सियावर रामचन्द्रकी जय ॥

## श्रीराम-स्तृति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं॥ नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥ पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥ शर-चाप-घर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥ दशस्थ-नंदनं ॥ दानव-दैत्यवंश-निकंदनं। सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं। मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥ जानत रावरो॥ तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुंदरं। इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं। मनु जाहि राचेउ मिलिहि सी बरु सहज सुंदर सौंवरो। कु माँत गौर असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली। सो.— जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। सियावर रामचन्द्रकी जय ॥ कोशलचंद करुना निघान सुजान सीलु सनेह दिनेश आर्नेदकंद दीनबंधु आजानुमुज रष्टुनंद গু

## श्रीराम-स्तृति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं॥ नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं॥ पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नीमि जनक सुतावरं॥ आर्नैदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं॥ शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥ छिब, नवनील-नीरज-सुंदरं। दानव-दैत्यवंश-निकंदनं। सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं। मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनं॥ मनु आहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँबरो। करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥ तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली॥ मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे॥ इति वदति तुलसीदास शंकर शेष-मुनि-मन-रंजनं। कु माँत गौर असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषी अली। सो.— जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि। दीनबंधु दिनेश अगणित अमित आजानुमुज रष्टुनंद त्र